❍ 07 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति दिलाने की सेवा की ?*

➢➢ *एक दो को सावधान करते बाप की याद दिलाते रहे ?*

➢➢ *सत्यता की हिम्मत से विश्वास का पात्र बने ?*

➢➢ *शांति व पवित्रता के खजाने से भरपूर रहे ?*

————————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *यह सकाश देने की सेवा निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात.....* सब सहज हो जाती है। दिन रात इस बेहद की सेवा में लग सकते हो। *जब बेहद को सकाश देंगे तो नजदीक वाले भी ऑटोमेटिक सकाश लेते रहेंगे। इस बेहद की सकाश देने से वायुमण्डल ऑटोमेटिक बनेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

____

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪

✧°˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ"*

⁓✧ सदा अपने को विश्व-परिवर्तक अनुभव करते हो? विश्व-परिवर्तन करने की विधि क्या है? स्व-परिवर्तन से विश्वपरिवर्तन। *बहुतकाल के स्व-परिवर्तन के आधार से ही बहुतकाल का राज्य-अधिकार मिलेगा। स्व-परिवर्तन बहुतकाल का चाहिए। अगर अन्त में स्व-परिवर्तन होगा तो विश्व-परिवर्तन के निमित्त भी अन्त में बनेंगे, फिर राज्य भी अन्त में मिलेगा।* तो अन्त में राज्य लेना है कि शुरू से लेना है? अच्छा, लेना शुरू से है और करना अन्त में है?

⁓✧ अगर लेना बहुतकाल का है तो स्वपरिवर्तन भी बहुतकाल का चाहिए। क्योंकि संस्कार बनता है ना। तो बहुतकाल का संस्कार न चाहते हुए भी अपनी तरफ खींचता है। जैसे अभी भी कहते हो कि मेरा यह पुराना संस्कार है ना, इसीलिए न चाहते भी हो जाता है। तो वह खींचता है ना। *तो यह भी बहुत समय का पक्का पुरुषार्थ नहीं होगा, कच्चा होगा, तो कच्चा पुरुषार्थ भी अपनी तरफ खींचेगा और रिजल्ट क्या होगी? फुल पास नहीं हो सकेंगे ना। इसलिए अभी से स्व-परिवर्तन के संस्कार बनाओ। नेचुरल संस्कार बन जाये। जो नेचुरल संस्कार होते हैं उनके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती।* स्व-परिवर्तन का विशेष संस्कार क्या है?

⁓✧ जो ब्रहमा बाप के संस्कार वो बच्चों के संस्कार। तो ब्रहमा बाप ने अपना संस्कार क्या बनाया, जो साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया? निराकारी,

निर्विकारी, निरअहंकारी-ये हैं ब्रह्मा बाप के अर्थात् ब्राह्मणों के संस्कार। तो ये संस्कार नेचुरल हों। निराकार तो हो ही ना, ये तो निजी स्वरूप है ना। और कितने बार निर्विकारी बने हो! अनेक बार बने हो ना। ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है निरहंकारी। तो ये ब्रह्मा के संस्कार अपने में देखो कि सचमुच ये संस्कार बने हैं? ऐसे नहीं-ये ब्रह्मा के संस्कार हैं, ये मेरे संस्कार हैं। फालो फादर है ना। पूरा फालो करना है ना। तो सदा ये श्रेष्ठ संस्कार सामने रखो। *सारे दिन में जो भी कर्म करते हो, तो हर कर्म के समय चेक करो कि तीनों ही संस्कार इमर्ज रूप में हैं? तो बहुत समय के संस्कार सहज बन जायेंगे। यही लक्ष्य है ना! पूरा बनना है तो जल्दी-जल्दी बनो ना।* समय आने पर नहीं बनना है, समय के पहले अपने को सम्पन्न बनाना है। समय रचना है और आप मास्टर रचयिता हैं। रचता शक्तिशाली होता है या रचना? तो अभी पूरा ही स्व-परिवर्तन करो। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में 'कब' 'कब' नहीं है। 'अब'। तो ऐसे पक्के ब्राह्मण हो ना।

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

~~✧ अन्तिम दृश्य और दृष्टा की स्थिति :- *चारों ओर की हलचल की परिस्थितियाँ हो फिर भी सेकण्ड में हलचल होते हुए भी अचल बन जाओ।* फलस्टॉप लगाना आता है? फलस्टॉप लागाने में कितना समय लगता है?

फुलस्टॉप लगाना इतना सहज होता है जो बच्चा भी लगा सकता है। *क्वेचन मार्क नहीं लगा सकेगा, लेकिन फुलस्टॉप लगा सकेगा।*

〰✧ तो वर्तमान समय हलचल बढने का समय है। लेकिन प्रकृति की हलचल और प्रकृतिपति का अचल होना। *अब तो प्रकृति भी छोटे-छोटे पेपर ले रही है लेकिन फाइनल पेपर में पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा।* एक तरफ प्रकृति का विकराल रूप, दूसरी तरफ पाँचों ही विकारों का अंत होने के कारण अति विकराल रूप होगा।

〰✧ अपना लास्ट वार आजमाने वाले होंगे। तीसरी तरफ सर्व आत्माओं के भिन्न-भिन्न रूप होंगे। एक तरफ तमोगुणी आत्माओं का वार, दूसरी तरफ भक्त आत्माओं की भिन्न-भिन्न पुकारा चौथी तरफ क्या होगा? *पुराने संस्कार। लास्ट समय वह भी अपना चान्स लेंगे। एक बार आकर फिर सदा के लिए विदाई लेगे।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ *किस आधार पर रूहानी खुशबू सदाकाल एकरस और दूर दूर तक फैलती है अर्थात् प्रभाव डालती है? इसका मूल आधार है 'रूहानी वृति'। सदा वृत्ति में रूह, रूह को देख रहे हैं, रूह से ही बोल रहे हैं। रूह ही अलग अलग अपना पार्ट

बजा रहे हैं। मैं रूह हूँ, सदा सुप्रीम रूह की छत्रछाया में चल रहा हूँ।* मैं रूह हूँ- हर संकल्प भी सुप्रीम रूह की श्रीमत के बिना नही चल सकता है। मुझ रूह का करावनहार सुप्रीम रूह है। करावनहार के आधार पर मैं निमित करने वाला हूँ। *मैं करनहार, वह करावनहार है। वह चला रहा, मैं चल रहा हूँ।* हर डायरेक्शन पर मुझ रूह के लिए संकल्प, बोल और कर्म में सदा हजूर हाजिर हैं।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————————

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप की श्रीमत पर चलकर, दुखो से लिबरेट होना"*

➳ _ ➳ मैं चमकती हुई मणि आत्मा, अपने प्रियतम बाबा से रुहरिहानं करने, अपनी सूक्ष्म देह में.... मीठे बाबा के पास कुटिया में पहुंचती हूँ... और कुटिया के बाहर ही झूले में बैठ जाती हूँ... और भीतर से बाबा मुझे आवाज दे रहे है... *मीठे बच्चे जल्दी मेरे पास आओ.*.. मै आत्मा झूले का आनन्द लेती हुई मदमस्त हूँ... कि मेरे प्यार में दीवाने बाबा, झूले में ही आ जाते है... और अपने वरदानी हाथो से झूले को झुलाते हुए... मुझ भाग्यवान आत्मा को लोरी के अहसास में भिगोते है... मीठे बाबा को अपनी यादो में यूँ सताकर... मै आत्मा परम् सुख की अनुभूतियों में डूब जाती हूँ...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को श्रीमत के हाथो में सुरक्षित करते हुए बोले :-

* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... सच्चे पिता ने सुखो भरी दुनिया का मालिक बनाकर किस कदर देवताई ताजो तख्त पर बिठाया था... पर देह के भान में आकर विकारो के चंगुल में फंस गए हो... *अब श्रीमत के हाथो में अपना हाथ देकर फिर से खुशियो में मुस्कराओ.*.."

⋙→ _ ⋙→ *मैं आत्मा अपने मीठे बाबा की दरिया दिली पर मोहित होकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... जनमो तक मैं आत्मा दुखो में भटकती रही... पर सच्चा सुख नसीब से कोसो दूर सा था... मीठे बाबा *आपने जीवन में आकर यह जीवन कितना मीठा, प्यारा कर दिया है.*.. ज्ञान की रौनक से इसे अनोखा बना दिया है...

❊ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को सच्चे सुखो का पता देते हुए कहते है :-* "मीठे लाडले बच्चे... मनुष्य मत और मनमत पर चलकर जीवन दुखो के काँटों से भर दिया है... *अब श्रीमत पर चलकर इसे प्रेम और सुखो की बगिया बनाओ.*.. ईश्वरीय मत ही सच्चे सुखो का आधार है और दुखो से मुक्ति का साधन है... इसलिए मीठे बाबा की श्रीमत को सदा दिल से थामे हुए सदा के सुखी हो जाओ..."

⋙→ _ ⋙→ *मै आत्मा अपने महान भाग्य को और कभी अपने बागबान पिता को देखती हुई कहती हूँ :-* "मीठे बाबा मेरे जीवन को सुखी बनाने परमधाम छोड़ जमीन पर ठिकाना बना बेठे हो... *निर्बन्धन भगवान होकर मेरे प्यार में पिता बन बन्ध से गए हो.*.. और श्रीमत की खुबसूरत राहों पर चलाकर सच्चा सोना बना रहे हो..."

❊ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को शक्तियो से भरते हुए बोले :-* "मीठे सिकीलधे बच्चे... अपने खिले हुए फूलो को दुखो की तपिश में कुम्हलाया देख... मै बागबान पिता धरा पर दौड़ आता हूँ... *अपनी यादो की छाया में बिठाकर फिर से फूलो को खिलाता हूँ..*. और श्रीमत की खुराक देकर सुखो की मुस्कान से सजाता हूँ..."

⋙→ _ ⋙→ *मै आत्मा अपने बागबान पिता को, दुःख के काँटों से घिरी, मुझ

आत्मा को फूल बनाते देख कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे दुलारे बाबा... आपको पाकर मेने सब कुछ पा लिया है... ज्ञान रत्नों की दौलत ने मेरा दामन गुणो से सजा दिया है... *ईश्वरीय प्यार में, मैं आत्मा दुखो की कालिमा से निकल, सुख भरे प्रकाश में आ गयी हूँ.*.." मीठे बाबा को अपने सारे जज्बातों को सुनाकर... मीठी मुस्कान लेकर, मै आत्मा साकार वतन में आ गयी....

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक बाप से ही सुनना है*"

➳ _ ➳ अपने शिव पिता परमात्मा, टीचर बाप से मधुर महावाक्य सुनने के लिए मैं मन, बुद्धि के विमान पर बैठ पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता परमात्मा की अवतरण भूमि मधुबन में। जहां स्वयं भगवान टीचर बन अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए आते हैं। *मधुबन के डायमण्ड हाल में मैं देख रही हूँ सभी ब्राह्मण आत्मायें गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित है और अपने टीचर शिव पिता परमात्मा का आह्वान कर रही हैं*। अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो कर मैं भी क्लास में आ कर बैठ जाती हूँ और अपने परम शिक्षक शिव बाबा का आह्वान करती हूँ।

➳ _ ➳ अपने बच्चों का निमंत्रण मिलते ही शिव बाबा परमधाम से नीचे आ जाते हैं और सूक्ष्म लोक में पहुँच, ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में बैठ सेकंड में हम बच्चों के सामने उपस्थित हो जाते हैं। *अब मैं देख रही हूँ अपने सामने संदली पर अपने परमशिक्षक शिव बाबा को उनके लाइट माइट स्वरूप में। शिक्षक के रूप में बापदादा का स्वरूप अति लुभावना लग रहा है*। बापदादा की लाइट माइट चारों और फैल कर क्लासरूम के वातावरण को दिव्य और अलौकिक बना रही है। वायुमण्डल में फैली दिव्य अलौकिक आभा बुद्धि को एकाग्र कर रही है।

➳ _ ➳ सभी एकाग्रचित हो कर, एकटक बाबा को निहारते हुए, ब्रह्मा मुख से उच्चारित बाबा के एक - एक महावाक्य को ध्यान से सुन रहे हैं। *सभी की बुद्धि रूपी झोली को अविनाशी ज्ञान रत्नों से भरपूर करके अब बापदादा वापिस अपने धाम लौट रहे हैं*। अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित, मन ही मन अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य पर नाज़ करती हुई अब मैं विचार करती हूँ कि विनाशी शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न आत्मा को भी अपने ज्ञान का कितना नशा होता है। किन्तु *यहां तो स्वयं भगवान अविनाशी ज्ञान रत्नों से मुझे भरपूर कर रहें है*।

➳ _ ➳ कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान टीचर बन मुझे पढ़ाने के लिए आते हैं, यह स्मृति मुझे असीम रूहानी नशे से भरपूर कर रही है। मैं सहज ही अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो रही है। अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप को धारण कर अब मैं सूक्ष्म लोक की ओर जा रही हूँ। *पाँच तत्वों की बनी साकारी दुनिया को पार कर मैं पहुँच गई सफेद प्रकाश की इस सुंदर दुनिया मे जहां मेरे सामने मेरे परम शिक्षक शिव बाबा ब्रह्मा बाबा के लाइट के आकारी शरीर मे विराजमान है*। अपनी बाहें फैलाये वो मुझे अपने पास बुला रहें हैं। उनकी बाहों में समाकर मैं स्वयं को उनके प्यार से भरपूर कर रही हूँ।

➳ _ ➳ उनके वरदानी हाथ मेरे सिर के ऊपर हैं और उनके हस्तों से निकल रही शक्तियां मुझ आत्मा में समाकर मेरी बुद्धि को स्वच्छ और निर्मल बना रही हैं। *बुद्धि रूपी बर्तन को शुद्ध और निर्मल बना कर अब बापदादा टीचर बन अविनाशी ज्ञान रत्नों के अथाह खजानों से मेरे इस बुद्धि रूपी बर्तन को भर रहें हैं*। अविनाशी ज्ञान के अखुट खजाने ले कर अब मैं फ़रिशता वापिस पांच तत्वों की बनी साकारी दुनिया में लौट रहा हूँ और अपने सूक्ष्म शरीर के साथ अपने साकारी शरीर मे प्रवेश कर रहा हूँ।

➳ _ ➳ अब मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हूँ और अपने परमशिक्षक शिव पिता के महावाक्यों को सदा स्मृति में रख, उनके द्वारा मिले अविनाशी ज्ञान को जीवन मे धारण कर अपने जीवन को ऊंच और महान बना रही हूँ। मेरे टीचर शिव बाबा द्वारा मिला सत्य ज्ञान अब मेरी बुद्धि में टपकता रहता है। *शास्त्रों का ज्ञान जो अब तक पढा और सना था वह सब कछ भल. एक

बाप से ही सुनते और उसे अपने जीवन मे धारण करते हुए अब मैं अपने जीवन को पूजनीय और महिमा लायक बना रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव शान्ति का खज़ाना पास रखती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा पवित्रता के खज़ाने से सदा भरपूर हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सबसे अधिक धनवान हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं सत्यता की हिम्मत से विश्वास का पात्र बनने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं बाप वा परिवार की स्नेही आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ सेवाधारियों को सदा सफलता स्वरूप रहने के लिए बाप समान बनना है। *एक ही शब्द याद रहे - फालो फादर। जो भी कर्म करते हो - चेक करो कि यह बाप का कार्य है? अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। यह चेकिंग की कसौटी सदा साथ रहे।* तो फालो फादर करने वाले अर्थात् -जो बाप का संकल्प वही मेरा संकल्प, जो बाप का बोल वही मेरा। इससे क्या होगा? जैसे बाप सदा सफलता स्वरूप है वैसे स्वयं भी सदा सफलता स्वरूप हो जायेंगे। तो बाप के कदम पर कदम रखते चलो। कोई चलता रहे उसके पीछेपीछे जाओ तो सहज ही पहुँच जायेंगे ना। तो फालो फादर करने वाले मेहनत से छूट जायेंगे और सदा सहज प्राप्ति की अनुभूति होती रहेगी।

✺ *"ड्रिल :- हर कर्म से पहले चेक करना कि क्या यह बाप का कार्य है।*"

➳ _ ➳ कलियुग की इस त्राहिमाम अवस्था में भगवान को पुकारती मैं आत्मा पहुँच गयी... ब्रह्माकुमारी के सेंटर पर... *जहाँ सच्चा सच्चा गीता का भगवान मिला... सच्चा सच्चा गीता ज्ञान मिला... स्वयं का... बाप का परिचय मिला... मैं कौन... मेरा कौन... का जवाब मिला... और मैं बन गयी संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा...* अपने प्रालब्ध के सतयुगी भाग्य को जान... अपने पुरुषार्थ को उड़ती कला में स्थिर कर के मैं आत्मा... एक चमकता हुआ दिव्य सितारा... बैठी हूँ सिर्फ एक की ही याद में... भृकुटी सिंहासन पर... और मन के तार एक बाप से जुड़ते ही मन बुद्धि रूपी पुष्पक विमान में बैठ पहुँच जाती हूँ बापदादा के पास...

➳ _ ➳ अखूट शांति ही शांति हैं जहाँ... पवित्रता का साम्राज्य छाया हैं जहाँ वह निज धाम... निज घर... में पहुँचते ही... *शांति की पराकाष्ठा का अनुभव कर रही हूँ... सुनहरे प्रकाश की दुनिया... पवित्र... सतोप्रधान आत्माओं की दुनिया में अपने आप को भी पवित्र... सतोप्रधान अवस्था में देख रही हूँ...* परमपिता परमात्मा से आती हुई शक्तियों रूपी किरणों को अपने में धारण करती जा रही हूँ... बाप समान बनती जा रही हूँ... बापदादा की उंगली पकड़ कर मैं आत्मा झमती हई जा रही हँ हर एक सेंटर पर... बापदादा के साथ मैं आत्मा

भी सभी सेंटर के नज़ारे देख रही हूँ...

➳ _ ➳ कोई सेंटर निर्विघ्न चल रहे हैं... तो कोई सेंटर पर सेवा ही सेवा का आनंदित माहौल छाया हुआ हैं... कोई सेंटर में योग भट्टी में सभी आत्माओं के विकारों को दहन होता हुआ और बाप समान बनने के पुरुषार्थ में जुडी आत्माओं को देख रही हूँ... बापदादा के रूहानी नैनो से निकलती किरणों की बौछारें सर्व सेंटर में समा रही हैं... और साथ साथ *बापदादा की दिव्य आकाशवाणी सुनाई दे रही हैं " बच्चे बाप समान बनो... अपनी सूक्ष्म चेकिंग करो कि क्या मेरा हर कार्य बाप समान हैं ? क्या मेरा हर बोल... संकल्प... में बाप की प्रत्यक्षता हो रही हैं ?"* बाबा की दिव्य और मधुर वाणी सभी सेंटर की आत्माओं... गहराई से धारण करती जा रही हैं...

➳ _ ➳ *बापदादा के सुनहरे बोल "फालो फादर करने वाले अर्थात् - जो बाप का संकल्प वही मेरा संकल्प, जो बाप का बोल वही मेरा।" हर एक सेंटर पर गूंज रहा हैं... और सभी ब्राह्मण आत्माएं अपने आप में बापदादा की प्रत्यक्षता करने के लिए दैवीय संस्कार का आह्वान कर रहे हैं...* और मैं आत्मा इस अलौकिक दिव्य नज़ारे को साक्षी बन देख कर बापदादा की सर्व शक्तियों को अपने में धारण कर बापदादा का हाथ पकड़ कर कहती हूँ "बाबा आज से मेरा भी हर बोल... संकल्प और कर्म आप समान होगा..." और बापदादा के हाथों से मेरे हाथों में समाती हुई शक्तियों को महसूस करती मैं आत्मा मन बुद्धि से पहुँच जाती हूँ अपने स्थूल शरीर में... अब तो हर बोल... संकल्प... और कर्म को सूक्ष्म चेकिंग रूपी अग्नि परीक्षा से पास विद ऑनर में आने का सर्टिफिकेट लेने का पुरुषार्थ कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔